सुनिश्चित होती है। यह सतत संघर्ष का परिणाम है जिसका कार्य सामाजिक प्रयोजन की पूर्ति करना है। यह राज्य द्वारा एक सुनिश्चित रूप में संगठित बल प्रयोग है, किंतु मात्र यही सामाजिक तंत्र को नियंत्रित करने का एकमात्र साधन नहीं हैं।''

इहरिंग का मानना है कि जब व्यक्तिगत प्रयोजन सामाजिक प्रयोजनों के विरोध में आता है तब राज्य का कर्तव्य सामाजिक प्रयोजनों या हितों की संरक्षा करना और उसे आगे बढ़ाना तथा उन व्यक्तिगत प्रयोजनों को दमन करना है, जो उसके विरोध में अग्रसर हैं। इस लक्ष्य की पूर्ति या तो पुरस्कार के द्वारा या राज्य के बल प्रयोग (दंड) के द्वारा की जा सकती है। चूंकि इहरिंग ने सामाजिक हितों को सुख की प्राप्ति एवं दु:खों के निवारण के रूप में प्रस्तुत किया है। अत: इनके सिद्धांत को **बेंथम** की अवधारणानुसार, **''सामाजिक उपयोगितावाद'' (Social Utilitarianism)** की संज्ञा दी जाती है। दंड के विषय में इहरिंग का मत है कि दंड सामाजिक लक्ष्य के लिए एक साधन है किंतु इसे प्रतिकारी या प्रतिकरात्मक आधार पर नहीं होना चाहिए। इस आधार पर इहरिंग ने समाजशास्त्रीय विधिशास्त्र की आधारशिला रखी, जिसमें उन सभी सिद्धांतों का बीजारोपण किया जिस पर परवर्ती विधिशास्त्रियों ने अपनी अवधारणाओं का महल तैयार किया। संभवत: इन्हीं विशेषताओं के कारण फ्रीडमैन ने इहरिंग को आधुनिक समाजशास्त्रीय विधिशास्त्र का जनक माना है।

इहरिंग के हितों पर आधारित सामाजिक उपयोगितावाद की इस आधार पर आलोचना की जाती है कि यह सिद्धांत केवल समस्याओं की ओर संकेत करता है संसाधन की ओर नहीं तथा यह भी कि विधि इच्छा की संरक्षा करती है न कि प्रयोजन की (कोर्क नोव)।

4. विधिक मान

विधिक मानों (Legal Norms) की व्याख्या करते हुए यूगेन **एहरलिच** (1882-1922) ने **सजीव विधि (Living Laws)** की अवधारणा पर यह सिद्धांत प्रतिपादित किया कि औपचारिक विधिक मानों, रूढ़ियों या प्रथाओं के बीच में कोई सारवान् अंतर नहीं है क्योंकि इन दोनों के पीछे एक ही अनुशास्ति कार्य करती है, जो सामाजिक दबाव (Social Pressure) है। सजीव विधि वही है, जिसका समाज पालन करता है। यदि किसी संविधि का पालन नहीं किया जाता है, तो वह सजीव विधि का अंग नहीं है। एहरलिच ने स्पष्ट किया कि ''विधिक विकास का गुरुत्व केंद्र विधान, न्यायशास्त्रीय विज्ञान अथवा न्यायिक विनिश्चयों में नहीं अपितु स्वयं समाज में स्थित होता है.....सजीव विधि वे तथ्य हैं, जो सामाजिक जीवन को शासित करते हैं। विधि के तथ्य प्रथा, प्रभुत्व, कब्जा और इच्छा की घोषणा हैं, जो सामाजिक संबंधों को विनियमित करते हैं और लोक की सजीव विधि होते हैं तथा राज्य निर्मित विधि केवल इस बड़े समूह की एक भाग मात्र होती है। वस्तुत: एहरलिच के इस सजीव विधि की अवधारणा को सैविनी के लोक चेतना के सिद्धांत के समकक्ष माना जाता है।

एहरलिच ने माना है कि सभी विधिक मान किसी न किसी रूप में समादेश अथवा निषेध और अंतर्भूत विधि के तथ्यों के बीच में संबंधों को विभिन्न तरीकों से विनियमित करते हैं। यथा–

(i) मात्र उन्हीं विधिक मानों को संरक्षा प्रदान की जा सकती है जो विशुद्ध रूप से विधि के तथ्यों पर आधारित हैं अर्थात् प्रत्यक्षत: सामाजिक तथ्यों से निरसित हैं- जैसे नुकसानी के लिए उपचार, अनुचित अनुवृद्धि।

(ii) राज्य द्वारा अधिरोपित विधिक समादेश अथवा निषेध संविदाओं के स्वत्वहरण अथवा बहुलता के मामले में सामाजिक तथ्यों को निर्मित अथवा अस्वीकार कर सकते हैं।

(iii) मानों को सामाजिक तथ्यों से पूर्णतया विलग्न किया जा सकता है, यथा-करों का अधिरोपण।

वस्तुत: एहरलिच का समाजशास्त्रीय विधिशास्त्र विश्लेषणात्मक विधिशास्त्र के प्रति एक प्रबल प्रतिक्रिया थी। विधिशास्त्र को अपेक्षाकृत अधिक वैज्ञानिक और व्यापक अर्थ प्रदान करते हुए एहरलिच ने अवधारणा प्रस्तुत की कि किसी समाज में विधि को समाज की आवश्यकताओं पर सर्वाधिक ध्यान रखते हुए निर्मित और प्रशासित किया जाना चाहिए, जिसके लिए सामाजिक स्थितियों का सूक्ष्म अध्ययन आवश्यक है जिसके अंतर्गत विधि को कार्य करना है। इस प्रकार एहरलिच सामाजिक न्याय के सापेक्षिक स्वरूप, जो देश काल के साथ परिवर्तित होता रहता है, का प्रबल पक्षधर बना जिसे अमेरिकी समाजशास्त्रीय विधिशास्त्र का व्यापक समर्थन मिला।

एहरलिच की विधिक अवधारणा की इस बात पर आलोचना की जाती है कि यह विधिक और अन्य सामाजिक मानों में

कोई प्रभेद नहीं करती है। अत: यह सदैव अनिवार्यत: मोटे तौर पर सामान्य समाजशास्त्र बन जाने के पास रहती है (फ्रीड मैन) तथा इसकी प्रवृत्ति 'मदोन्मादात्मक विधिशास्त्र' (Magleamanic Jurisprudence) के रूप में है। अत: उसका सिद्धांत अब कालातीत हो गया है क्योंकि समाज के सभी क्षेत्रों में विधान सर्वव्यापी होता जा रहा है और वह रूढ़ियों तथा प्रथाओं का स्थान लेता जा रहा है।

5. सामाजिक अभियांत्रिकी (Social Engineering)

समाजशास्त्रीय विधिशास्त्र की आधुनिकतम और लगभग सर्वमान्य प्रकृति रखने वाली इस विचारधारा के प्रवर्तक अमेरिकन विधिशास्त्री **डीन रॉस्को पाउंड** (1870-1964) हैं, जिन्होंने सर्वप्रथम यह प्रतिपादन किया कि विधि का कार्य **सामाजिक इंजीनियरिंग** है और उन्होंने विधि के क्रियात्मक पहलू पर अपना ध्यान केंद्रित किया, इसलिए **पैटन** ने इस शाखा को **''कृत्यात्मक विचारधारा''** (Fuctional School) की संज्ञा दी है।

सामाजिक इंजीनियरिंग को स्पष्ट करते हुए न्यायाधीश रह चुके रॉस्को पाउंड ने कहा है कि ''मैं विधि को सामाजिक आवश्यकताओं–सभ्य समाज के अस्तित्व में अंतर्भूत दावों और मांगों की पूर्ति करने वाली सामाजिक संस्था के रूप में समझ कर संतुष्ट हूं।'' दूसरे शब्दों में पाउंड का सामाजिक अभियांत्रिकी से अभिप्राय समाज में प्रतिस्पर्धा रखने वाले हितों के बीच एक संतुलन से है, जिसका दायित्व विधिशास्त्रियों पर है अर्थात् विधिशास्त्री विधि द्वारा संरक्षित उन हितों का वर्गीकरण करें और उनकी विशद व्याख्या करें जो विधि द्वारा संरक्षित किए जाते हैं। जिन हितों को संरक्षित किया जाना चाहिए उन्हें पाउंड ने तीन शीर्षकों में वर्गीकृत किया है–

(i) निजी (प्राइवेट) हित, (ii) लोक हित, तथा
(iii) सामाजिक हित।

निजी हित के अंतर्गत पाउंड ने शारीरिक क्षति, ख्याति, स्वेच्छा व निष्ठा की स्वतंत्रता को माना है जिनमें व्यक्तिगत हित जैसे-विवाह एवं भरण-पोषण के दावे तथा संपदा के अधिकार, विरासत, वसीयती उत्तराधिकार और पेशागत स्वतंत्रता भी सम्मिलित हैं। इसी प्रकार लोक हित के अंतर्गत राज्य के सरंक्षण में हित तथा सामाजिक हितों के रक्षक के रूप में राज्य के हित सम्मिलित है। सामाजिक हित, जिन्हें विधिक संरक्षा प्राप्त होनी चाहिए, के अंतर्गत पाउंड ने शांति और व्यवस्था के संरक्षण और सामान्य सुरक्षा के रख-रखाव में हित, विवाह एवं धार्मिक संस्थाओं के संरक्षण में हित, भ्रष्टाचार के प्रतिरोध एवं सामान्य नैतिकता के संरक्षण में हित, सामाजिक साधनों के परिरक्षण में हित, सामान्य उन्नति में हित (अर्थात शिक्षा, वाक् एवं अभिव्यक्ति, व्यापार एवं वाणिज्य की स्वतंत्रता) तथा मानव व्यक्तित्व के उन्नयन में हित इत्यादि को माना है। पाउंड ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि हितों का उपर्युक्त वर्गीकरण अंतिम नहीं है और वे सापेक्ष होते हैं और वे किसी विशिष्ट समय पर एक समुदाय के द्वारा धारण किए जाने वाले विचारों पर आधृत होते हैं।

इस प्रकार पाउंड ने 'हित' को ही विधि की मुख्य विषय वस्तु मानते हुए कहा है कि विधि का यह कर्तव्य है कि वह हितों का मूल्यांकन करे और स्थायित्व और परिवर्तन के बीच में संतुलन स्थापित करे और यह विधिशास्त्रियों के द्वारा किया जाना चाहिए, जो एक प्रयोग से अधिक कुछ भी नहीं है। इसीलिए **प्रो. एलेन** ने पाउंड के विचारों को अपनी कृति **''लॉ इन द मेकिंग''** में **''प्रयोगात्मक विधिशास्त्र'' (Experimental Jurisprudence)** की संज्ञा दी है।

वस्तुत: पाउंड ने अपने सिद्धांतों को सभी मताग्रहों से मुक्त रखते हुए जिन व्यापक हितों पर केंद्रित करके विधिशास्त्रियों, न्यायाधीशों एवं अधिवक्ताओं पर जो प्रयोगात्मक उत्तरदायित्व सौंपा, उन्हें काफी लोकप्रियता मिली और प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से विश्व के लगभग सभी सभ्य समाजों की विधियों में इस सिद्धांत की झलक मिलती है। यही कारण है कि आधुनिक विधि चिंतन पर पाउंड के सामाजिक इंजीनियरिंग का व्यापक प्रभाव है और इस विषय का अध्ययन उसके सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए ही किया जा रहा है।

यद्यपि पाउंड के सिद्धांत की आलोचना उसके ''अभियांत्रिकी'' शब्द के प्रयोग को लेकर की जाती है कि यह विधिक सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य में उपयुक्त शब्द नहीं है तथा यह विधि के एक भाग (गयात्मक स्वरूप–dynamic nature) की उपेक्षा करता है तथा इससे व्यक्ति की स्वतंत्रता प्रभावित होगी, किंतु इन आलोचनाओं

ने पाउंड के सिद्धांत पर कोई विशेष प्रभाव नहीं डाला है और यह आज भी अध्ययन की विषय-वस्तु बना हुआ है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में संविधान के भाग III एवं IV के उपबंधों तथा पश्चात्वर्ती अनेक संवैधानिक संशोधन एवं अनेक सामाजिक विधियां इस सिद्धांत से प्रेरित माने जा सकते हैं। चूंकि वर्तमान विधिशास्त्र की मुख्य विषय-वस्तु 'सामाजिक विचारधारा' को ही माना जा रहा है। अतः इस शाखा का दृष्टिकोण गतिशीलता की ओर अग्रसर है। वेबर, कार्लरेनर, पुश्किन इत्यादि विधिशास्त्रियों ने भी अपने दृष्टिकोण समाजवादी विचारधारा के अंतर्गत प्रस्तुत किए हैं, जिनके चिंतन मार्क्सवादी चिंतनों से प्रभावित हैं तथा उनका सार तत्व यह है कि विधि का अध्ययन समाज की सापेक्षता में किया जाना चाहिए। बाद में समाजशास्त्रीय चिंतन के एक भाग के रूप में एक यथार्थवादी विचारधारा (Realist School) का उदय हुआ।

प्रश्नकोश

Q. समाजशास्त्रीय स्कूल किस कार्य की प्रतिक्रिया थी?

A. **प्रमाणवाद** (विश्लेषणात्मक) के विरुद्ध।

Q. समाजशास्त्रीय विचारधारा के प्रमुख समर्थक कौन हैं?

A. **काम्टे, बेंथम, इहरिंग, वेबर, ड्यूगिट, एहरलिच, रॉस्को पाउंड**।

Q. सामाजिक समेकता के सिद्धांत का प्रतिपादन किसने किया?

A. **ड्यूगिट** ने।

Q. ''सामाजिक समेकता एक तथ्य है और यह सामाजिक जीवन के लिए आवश्यक है।'' यह कथन किसका है?

A. **ड्यूगिट** का।

Q. ''सामाजिक समेकता का आधार समाज के लोगों की पारस्परिक निर्भरता है।'' किसने कहा है?

A. **ड्यूगिट** ने।

Q. ''लॉ इन द मॉडर्न स्टेट'' नामक कृति किस विधिशास्त्री की है?

A. **ड्यूगिट** की।

Q. ड्यूगिट के अनुसार, सामाजिक संसक्ति में श्रम का विभाजन सर्वाधिक महत्व का तथ्य है। इस सिद्धांत को उसने क्या नाम दिया?

A. ''**सामाजिक संहति**'' (एकात्मकता) का सिद्धांत।

Q. ''सामाजिक कार्य का विचार, व्यक्तिपरक अधिकार की संकल्पना को निरस्त कर देता है।'' यह कथन किसका है?

A. **ड्यूगिट** का।

Q. ''सामाजिक नियंत्रण की धुरी राज्य संगठन में निहित न होकर राज्य के अंतर्गत पाए जाने वाले सामूहिक निकायों में निहित है। ''यह किसका कथन है?

A. **ड्यूगिट** का।

Q. जीवित विधि (Living Law) की अवधारणा किस विधिशास्त्री की देन है?

A. **एहरलिच** की।

Q. ''विधिक विकास का गुरुत्वाकर्षण न तो विधायन में है और न ही न्यायिक निर्णय में, वरन स्वयं समाज में है।'' यह कथन किस विधिशास्त्री का है?

A. ऑस्ट्रियाई विधिशास्त्री यूजेन **एहरलिच** का।

Q. ''डास रैक्ट डैस बैसिट्स'' किस विधिशास्त्री की रचना है?

A. **सैविनी** की [अर्थ ''कब्जा की विधि'' (The Law of Possession)–प्रकाशन 1803 ई. में]।

Q. किस विधिशास्त्री ने संहिताकरण का विरोध किया, जो विधिक विकास को एक लौह पिंजरे में बंदी बना सकता था तथा व्यक्तियों के विचारों की बाढ़ के उस निर्बाध प्रवाह को सुनिश्चित करने का प्रयास किया जो जल की शानदार असंयतता से प्रवाह में है?

A. **सैविनी** ने।

Q. सामाजिक अभियांत्रिकी सिद्धांत का प्रवर्तक विधिशास्त्री कौन है?

A. **रॉस्को पाउंड**।

Q. सामाजिक अभियंत्रण की संकल्पना किसके द्वारा दी गई परिभाषा के मूल में है?

A. **डीन रॉस्को पाउंड** के।

Q. ''विधि सामाजिक अभियांत्रिकी का एक साधन है।'' यह किसका कथन है?

A. **रॉस्को पाउंड का**।

Q. रॉस्को पाउंड द्वारा प्रतिपादित सामाजिक अभियांत्रिकी के सिद्धांत का सही अर्थ क्या है?

A. समाज में प्रतिस्पर्धी हितों का संतुलन।

Q. ''विधि का कार्य सामाजिक अभियंत्रण है।'' यह कथन किसका है?

A. **रॉस्को पाउंड** का।

Q. हितों के संतुलन का सिद्धांत किसने प्रतिपादित किया था?

A. **रॉस्को पाउंड** ने।

Q. रॉस्को पाउंड के अनुसार, सामाजिक हित के अंतर्गत व्यक्तिगत जीवन में क्या सम्मिलित हैं?

A. **1. सामान्य स्वास्थ्य**, **2. अवसर** और **3. जीवन की दशाएं**।

Q. ''हित विधि की मुख्य विषय-वस्तु है और विधि का कार्य मानवीय आवश्यकताओं और इच्छाओं की संतुष्टि करना है''। ये विचार किस विधिशास्त्री के हैं?

A. **रॉस्को पाउंड के।**

Q. ''विधि समाज की आवश्यकताओं, दावों और मांगों की संतुष्टि हेतु एक सामाजिक संस्था है।'' यह कथन समाजशास्त्रीय विचारधारा की किस उपशाखा से संबंधित है?

A. **सामाजिक अभियंत्रण शाखा** से।

Q. समाजशास्त्रीय विधिशास्त्रियों द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों को सूचीबद्ध कीजिए?

A.

सूची I	**सूची II**
विधिशास्त्री	**प्रतिपादित सिद्धांत**
(i) ऑगस्ट काम्टे	वैज्ञानिक प्रत्यक्षवाद (प्रमाणवाद)
(ii) इहरिंग	सामाजिक उपयोगितावाद
(iii) ड्यूगिट	सामाजिक समेकता
(iv) गीयर्क	समूह व्यक्तित्व की वास्तविकता
(v) बेंथम	उपयोगितावादी व्यक्तिवाद/सुख-दुःख
(vi) रॉस्को पाउंड	सामाजिक अभियांत्रिकी (अभियंत्रण)
(vii) एहरलिच	सजीव (जीती जागती) विधि
(vii) सैविनी	लोक चेतना

Q. **कथन-(A) :** समाजशास्त्रीय विचारधारा की पाउंड के नाम से पहचान करना सरल है।

कारण-(R) : समाजशास्त्रीय विचारधारा का न तो पाउंड से प्रारंभ होता है और न अंत।

कूट :

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) का सही स्पष्टीकरण है।

(b) (A) और (R) दोनों सही हैं किंतु (R), (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

(c) (A) सही है, परंतु (R) गलत है

(d) (A) गलत है, परंतु (R) सही है।

उपर्युक्त में सही विकल्प क्या है?

A. (b)

Q. निम्नलिखित चार प्रकार के विधिक सिद्धांतों पर विचार करते हुए समय के अनुसार उनके सही काल-क्रम बताइए?

(i) लोक चेतना

(ii) विधि का आज्ञापक सिद्धांत

(iii) सामाजिक अभियांत्रिकी

(iv) सामाजिक संहति

A. 2, 1, 4 और 3 →विधि का आज्ञापक सिद्धांत–लोक चेतना–सामाजिक संहति–सामाजिक अभियांत्रिकी।

ऐतिहासिक विचारधारा

बर्लिन विश्वविद्यालय के अध्यापक फ्रेडरिक कार्ल वॉन सैविनी को ऐतिहासिक विचारधारा का प्रवर्तक माना जाता है। रोमन विधि का विस्तार, अठारहवीं शताब्दी का तर्कनावाद एवं फ्रांसीसी क्रांति के बाद संहिताकरण, नेपोलियन का राष्ट्रीयतावादी दृष्टिकोण, आर्थिक आंदोलन एवं अर्थशास्त्रीय अवधारणा, समाज में नए वर्गों का उदय तथा इटली में विको, फ्रांस में मॉन्टेस्क्यू, इंग्लैंड के बर्क जर्मनी के ह्यूगो और हर्डर के विधिशास्त्रीय विवेचनों ने सैविनी को ऐतिहासिक विधारधारा की नींव रखने की प्रेरणा दी। अपने चर्चित निबंध वोम वैरफ (1814) में ऐतिहासिक विचारधारा की नींव रखते हुए उसने अपनी कृतियों द लॉज ऑफ पजेशन, द हिस्ट्री ऑफ रोमन लॉज इन मिडिल एज और द सिस्टम ऑफ मॉडर्न रोमन लॉ के द्वारा ऐतिहासिक विचारधारा को पूरी तरह से स्थापित किया।

सैविनी ने अपनी विधिशास्त्रीय विवेचना में स्पष्ट किया कि विधि का राष्ट्रीय चरित्र होता है। इसका प्रारंभिक विकास स्वत: होता है और बाद में यह विधिशास्त्रियों के द्वारा विकसित किया जाता है। अपने विधिक सिद्धांतों को सैविनी ने निम्नलिखित सूत्रों में सारांशित किया है;

(i) विधि सर्वदा लोक चेतना के अनुरूप होनी चाहिए।

(ii) विधि अचेतन और कायिक विकास का विषय है, विधि प्राप्त की (पाई) जाती है, बनाई नहीं जाती।

(iii) विधि की प्रकृति विश्व व्यापी होने की नहीं है। यह भाषा की भांति ही लोक और काल के साथ परिवर्तित होता रहता है।

(iv) रूढ़ि विधायन से श्रेष्ठतर और उसके पूर्ववर्ती होते हैं।

(v) विधि की जटिलता के साथ सामान्य चेतना का प्रतिनिधित्व विधिज्ञों द्वारा किया जाता है, जो विधिक सिद्धांतों का निरूपण करते हैं। विधिज्ञों का कार्य विधि को लोक चेतना के अनुरूप एक उद्घोषक के रूप में स्वरूप प्रदान करना होता है।

(vi) विधान विधि निर्माण का अंतिम प्रक्रम है। इसलिए विधिज्ञ या विधिशास्त्री विधायक से अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण होता है।

सैविनी ने स्पष्ट लिखा कि विधि का स्रोत सामान्य **लोक चेतना (Volkgeist)** में होती है। यह लोक जीवन से उद्भूत होती है और उसकी भावना की अभिव्यक्ति है। यह प्रागैतिहासिक होते हुए समुदायों में उनकी भाषा, आचार और राजनैतिक संगठन की भांति पहले से ही प्रतिष्ठित होती है। भाषा की भांति विधि भी राष्ट्र के जीवन और चरित्र के साथ विकसित होती है। प्रारंभ में विधि का विकास आंतरिक आवश्यकता के सिद्धांत के अनुरूप स्वत: होता है और सभ्यता के एक प्रक्रम पर पहुंचने के बाद राष्ट्रीय क्रिया-कलाप के अनुरूप विकसित एवं विभिन्न शाखाओं में विभाजित हो जाते हैं और अंतत: वे विशेषज्ञों के द्वारा नवीनता धारण करते हैं।

वस्तुत: सैविनी ने अपनी विधि संबंधी अवधारणा में अपने पूर्ववर्ती मॉन्स्क्यू, जिसे मेन ने प्रथम विधिशास्त्री माना है, के यह विचार कि ''विधियां जलवायु, स्थानीय स्थितियों, संयोग अथवा पाखंड द्वारा सृष्ट होती है, ह्यूगो का यह विचार कि ''विधि लोगों की भाषा और आचार की भांति अपना स्वरूप ग्रहण करती है और परिस्थितियों के अनुकूल विकसित होती है तथा बर्क के इस दृष्टिकोण को अपने अध्ययन का विषय बनाया कि विधि एक क्रमिक और कायिक प्रक्रिया की उपज है।

सैविनी का उपर्युक्त विवेचन देश-काल में काफी लोकप्रिय हुआ जिसके कारण उसे उन्नीसवीं शताब्दी का सबसे बड़ा विधिशास्त्री माना जाने लगा। इहरिंग ने तो सैविनी की कृति **''डास रेचर डेस वेस्टेजेज''** से विधिशास्त्र का जन्म माना है। वस्तुत: सैविनी के विचार तर्कनावाद (Rationalism) और प्राकृतिक विधि की तीव्र और सशक्त प्रतिक्रिया थी जिसके विचारों ने अनेक समकालीन तथा उत्तरवर्ती विधिशास्त्रियों यथा मेन, विनोग्रेडॉफ, लॉर्ड ब्राइस, पोलाक, मेट लैंड, होल्डवर्थ, होम्स इत्यादि को प्रभावित किया और विधि एवं विधिशास्त्र की अवधारणा का परिमार्जन किया।

सैविनी के विधिक स्रोत संप्रभु के बजाय सामाजिकता को इतनी लोकप्रियता प्राप्त हुई कि उसे **'डार्विन के पूर्व ही डार्विनवादी और समाजशास्त्रियों के पूर्व ही समाजशास्त्री'** की संज्ञा प्रदान की गई। फिर भी सैविनी के विचारों की निम्न आधारों पर आलोचना की जाती है–

(i) सैविनी के विधिक सिद्धांतों में असंगता है (बेसलर एवं गीयर्क)।

(ii) मात्र लोक चेतना ही विधि का अनन्य स्रोत नहीं है।

(iii) रूढ़ियां हमेशा लोक चेतना पर आधारित नहीं होती हैं।

(iv) विधि को प्रभावित करने वाले अन्य कारकों/तत्वों की उपेक्षा की गई।

(v) अनेक तथ्य यथा विकास की रीति और प्रगति आदि स्पष्टीकरणविहीन हैं (प्रो. कार्कुनोव)।

(vi) सैविनी ने न्यायशास्त्रीय निराशावाद को प्रोत्साहित किया (रॉस्को पाउंड)।

उपर्युक्त आलोचनाओं के बावजूद सैविनी के समर्थक उसके आलोचकों से अधिक हैं। प्रो. **एलेन** का मानना है कि 'विधिशास्त्र में ऐतिहासिक आंदोलन को कल्पना के विरुद्ध तथ्य का विद्रोह माना जा सकता है' (लॉ इन द मेकिंग में)। इतना ही नहीं सैविनी के पश्चात् उसके सिद्धांतों का अनुसरण जर्मनी, यूरोप के अलावा

इंग्लैंड (मेन, विनोग्रेडाफ, लॉर्ड ब्राइस) में भी किया गया। **एहरलिच** ने **'सजीव विधि' (Living Law)** को महत्व प्रदान करते हुए कहा कि यह विधि के शुष्क कंकाल से भिन्न है।

सैविनी के शिष्य पुच्ता ने सैविनी के 'सामान्य लोक चेतना' के बजाय 'इच्छा' को महत्व प्रदान किया। उसके अनुसार 'व्यक्तिगत इच्छा' लोक की सामान्य इच्छा में विरोध उत्पन्न करता है, जो विधि की कल्पना को जन्म देता है। उस समय राज्य व्यक्ति के कार्य क्षेत्र विधि के द्वारा सीमित कर देता है और एक मूर्त और कार्यक्षम प्रणाली उत्पन्न होती है। अतः अकेले न तो व्यक्ति ही और न ही राज्य विधि के स्रोत हैं। विधि की उत्पत्ति राज्य के पूर्ववर्ती है, किंतु राज्य की सृष्टि के पूर्व कोई विधि नहीं होती है। अंततः सैविनी के विचार ने इसी शाखा की एक अन्य विचारधारा को जन्म दिया जिसे ऐतिहासिक दार्शनिक विचारधारा के नाम से जाना जाता है।

ऐतिहासिक दार्शनिक विचारधारा

इस चिंतन को यद्यपि दार्शनिक या तत्वमीमांसीय (Meta-physical) विचारधारा का नाम दिया गया, किंतु प्रोफेसर फ्रीडमैन ने इसे ''दार्शनिक इतिहासवाद'' (Philosophical Historism) की संज्ञा दी है। इस शाखा के मुख्य विचारक हीगल, मेन, कोहलर, स्पैगलर आदि हैं किंतु हीगल को मुख्य विचारक माना जाता है। हीगल का मत है कि राज्य और विधि दोनों ही मानव तर्क की वैकासिक उपज हैं तथा विधि का आधार नैतिक होता है (लीगल थ्योरी में)। चूंकि यह विधिक विवेचन पूर्णतः दर्शन पर आधारित है। अतः इसे कम समर्थन प्राप्त हुआ सिवाय उसके दंडशास्त्र के। बाद में आंग्ल विधिशास्त्री सर हेनरीमेन ने इस विचारधारा में अपनी तुलनात्मक अध्ययन पद्धति से काफी परिमार्जन किया।

सर हेनरीमेन (1822-1888) ने अपनी कृतियों एंशिएंट लॉ, विलेज कम्युनिटी, अर्ली हिस्ट्री ऑफ इंस्टीट्यूशंस, डेजर्टेशन ऑन अर्ली लॉ एंड कस्टम में अपने विधिक चिंतन और दर्शन के द्वारा विधि के ऐतिहासिक और तुलनात्मक अध्ययन पर जोर दिया और निष्कर्षित किया कि विधि निम्नलिखित प्रक्रमों में विकसित हुई–

(1) प्रथमतः विधि दैवीय प्रेरणा के अंतर्गत शासकों के समादेश द्वारा निर्मित की गई।

(2) द्वितीयतः समादेश स्थायी रूप धारण करके रूढ़िगत विधि का रूप धारण कर लेते हैं।

(3) तृतीयतः विधि धर्माचार्यों के हाथ में चली जाती है।

(4) चतुर्थतः विधियों का संहिताकरण (जैसे सोलन का एटिक कोड या रोम में ट्वेल्व टेबिल्स) प्रारंभ होता है और इसके आगे विधि का विकास युग अवरुद्ध हो जाता है।

विधि निर्माण एवं विकास के उपर्युक्त विभाजन के बाद मेन ने अवधारणा प्रस्तुत किया कि–

(1) चतुर्थ चरण के बाद जो समाज आगे प्रगति नहीं करते वे स्थिर समाज हैं एवं जो समाज अपनी विधि का नवीन रीतियों से विकास करते हैं वे प्रगतिशील कहलाते हैं।

(2) प्रगतिशील समाज तीन रीतियों से अपनी विधि का विकास करते हैं–

(i) विधिक कल्पितार्थ, (Legal Fiction)- विधि का अनुकूलन

(ii) साम्या (Equity)- न्यायिक-सिद्धांत;

(iii) विधायन (Legislation)- विधि निर्माण की प्रत्यक्ष और प्रणालीबद्ध रीति।

(3) विकास के सामान्य अनुक्रम के अंत में जो विधिक दशाएं अस्तित्ववान रहती हैं, वे हैसियत कहलाती हैं। जैसे- पेटर फेमिलीयाज।

(4) प्रगतिशील समाजों में हैसियत की कल्पना विघटित हो जाती है और संविदात्मक विचारों का जन्म होता है।

(5) ''प्रगतिशील समाजों का संचलन अब तक हैसियत से संविदा पर संचलन का रहा है।'' ("The movement of progressive societies has hitherto been a movement from status to contract.")

यद्यपि मेन ने ऐतिहासिक विचारधारा की प्रारंभिक कमियों में सुधार का प्रयास किया और उनके विचार तत्कालीन तथ्यों एवं परिस्थितियों में उपयुक्त भी रहे, फिर भी ये सार्वभौमिक धारणा के रूप में विकसित नहीं हो सके। किंतु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि मेन के विधिशास्त्रीय विवेचन की झलक आज भी देखने को मिलती है। भारत सहित विश्व के अनेक देशों में विधियों का संहिताकरण, सामाजिक विधियों का सृजन एवं विधायन इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। दूसरा यह भी कि मेन ने विधियों के

तुलनात्मक अध्ययन संबंधी नवीन विचार को विधिशास्त्र में स्थान दिया, जिससे उत्तरवर्ती विधिशास्त्रियों यथा मेटलैंड, विनोग्रेडॉफ लॉर्ड बाइस आदि को प्रेरणा प्राप्त हुई। इन्हें ऐतिहासिक स्कूल का डार्विन माना जाता है।

फिर भी प्रायः मेन के विधिक अवधारणा की निम्न बातों पर आलोचना की जाती है–

(i) मेन का सिद्धांत सीमित दृष्टिकोण रखता है और केवल अपने समय में ही ठीक था।

(ii) यह सिद्धांत वर्तमान समय के लिए उपयुक्त नहीं है क्योंकि संविदा करने की व्यक्तिगत क्षमता अब लुप्तप्राय होकर संस्थागत प्रवृत्ति की ओर अग्रसर है जिसमें व्यक्ति की संविदात्मक स्वतंत्रता सीमित कर दी गई है।

(iii) समाज अब प्रगतिशील नहीं अपितु प्रतिगामी हो गए हैं।

(iv) प्रायः प्रगतिशील समाज का संचलन हैसियत से संविदा की ओर नहीं अपितु संविदा से हैसियत की ओर भी देखने को मिलता है।

प्रश्नकोश

Q. विधिशास्त्र के ऐतिहासिक स्कूल या विधिशास्त्र की इतिहासवादी विचारधारा (शाखा) का प्रवर्तक किसे माना जाता है?

A. **फ्रेडरिक वॉन सैविनी**।

Q. किस विधिशास्त्री को ऐतिहासिक स्कूल का डार्विन कहा जाता है?

A. **हेनरीमेन** को।

Q. किस विधिशास्त्री को डार्विन के पूर्व डार्विनवादी और समाजशास्त्रियों से पूर्व समाजशास्त्री कहा जाता है?

A. **सैविनी** को।

Q. विधिशास्त्र की ऐतिहासिक विचारधारा किस तथ्य की प्रक्रिया मानी जाती है?

A. **कल्पना के विरुद्ध** (अध्यात्मवाद के प्रभाव स्वरूप व्याप्त कल्पना (Speculations)।

Q. विधिशास्त्र की कौन-सी विचारधारा इस विचार से जुड़ी है कि ''विधि पाई जाती है, बनाई नहीं जाती। यह स्वयं विद्यमान है''?

A. **ऐतिहासिक विचारधारा**।

Q. ''विधि अंततः शांतिपूर्वक कार्यरत आंतरिक ताकतों की उपज है।'' यह कथन किस विधिशास्त्रीय विचारधारा का है?

A. **ऐतिहासिक विचारधारा**।

Q. ''विधि का राष्ट्र के साथ जन्म होता है और वह उसी के साथ बढ़ती है तथा उसके विघटन पर समाप्त हो जाती है और उसकी यह एक विशेषता है।'' यह मत किस विचारधारा का है?

A. **ऐतिहासिक विचारधारा** का।

Q. ''विधि लोक विकास के साथ विकसित होती है, लोगों की शक्ति के साथ शक्ति-संपन्न होती है और अंत में जब राष्ट्र अपनी राष्ट्रीयता खो देता है, तो वह मर जाती है।'' विधि के संबंध में उक्त विचारधारा विधि की किस शाखा से संबंधित है?

A. **ऐतिहासिक शाखा** (कथन सैविनी का है)।

Q. विधिशास्त्र में विधि के राष्ट्रीय चरित्र को किसने प्रस्थापित किया?

A. **सैविनी** ने।

Q. सैविनी का सिद्धांत किस विधि पर आधारित है?

A. **रोमन विधि** पर।

Q. ''विधि कुछ और नहीं अपितु जन साधारण की अंतः चेतना है।'' किसने कहा है?

A. **सैविनी** ने।

Q. लोक चेतना (वाक्जीस्ट) के सिद्धांत का जनक/प्रतिपादक विधिशास्त्री कौन है?

A. **सैविनी**।

Q. ''विधि का स्रोत लोक चेतना है।'' यह कथन किसका है?

A. **सैविनी**।

Q. ''द सिस्टम ऑफ मॉडर्न रोमन लॉ'' का लेखक कौन है?

A. **सैविनी**।

Q. सर्वप्रथम विधि का तुलनात्मक अध्ययन किस विधिशास्त्री ने किया?

A. **मेन** ने।

Q. ऐतिहासिक विचारधारा के मुख्य विधिशास्त्री कौन हैं?

A. **सैविनी**, **हीगल**, **मेन**, **पुच्ता**।

Q. किस विधिशास्त्री के अनुसार ''प्रगतिशील समाज अब तक हैसियत से संविदा की ओर गतिमान है''?

A. **सर हेनरीमेन** के अनुसार।

Q. सूची-I को सूची-II के साथ सुमिलित करके सही उत्तर बताइए?

सूची-I	**सूची-II**
A. प्राकृतिक विधि का पुनरुज्जीवन	1. हर्बर्ट स्पेंसर
B. उपयोगितावादी व्यक्तिवाद	2. हीगल
C. समाजशास्त्रीय विचारधारा	3. स्टैम्मलर
D. ऐतिहासिक विचारधारा	4. बेंथम

A. ।

A. A-**3**, B-**4**, C-**1**, D-**2**

Q. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करके सही उत्तर दीजिए?

सूची-I	**सूची-II**
A. ऐतिहासिक विचारधारा	1. एक्यूनास
B. समाजशास्त्रीय विचारधारा	2. बेंथम
C. प्राकृतिक विधि	3. ऑगस्ट काम्टे
D. विश्लेषणात्मक विचारधारा	4. पुच्ता।

A. A-**4**, B-**3**, C-**1**, D-**2** ।

यथार्थवादी विचारधारा (Realist School)

समाजशास्त्रीय चिंतन के एक भाग के रूप में प्रस्थापित यथार्थवादी विचारधारा को कभी-कभी कृत्यात्मक विचारधारा का वाम-पक्ष (Leftwing of the Functional School) की भी संज्ञा दी जाती है। इस विचारधारा के **मुख्य विधिशास्त्री ग्रे, फैंक, लिवेलिन** और **ओ. डब्ल्यू. होम्स** हैं, जिनके अनुसार विधि केवल एक आधिकारिक कार्य है और इसलिए, वे बातें जो किसी न्यायाधीश को एक विनिश्चय पर पहुंचने में प्रभावित करती हैं, अध्ययन की परिधि में आती हैं। वस्तुतः इस विचारधारा पर अमेरिका के फलमूलक दर्शन (Pragmatic Philosophy) का प्रभाव दर्शित होता है, जो न्यायपालिकीय कृत्य एवं दर्शन से उत्प्रेरित है।

ग्रे ने विधि को परिभाषित करते हुए कहा कि विधि वह है जिसकी न्यायाधीश घोषणा करते हैं, जबकि फलमूलकवाद एक रूप में विध्यात्मक (Positivist) दृष्टिकोण है जिसने विचारण और कार्यकरण-तर्क से तथ्य एवं कार्यों पर पहुंचने पर बल दिया। वस्तुतः यथार्थवादिता का केंद्र बिंदु न्यायालयीय विनिश्चय एवं न्यायाधीशों के निगमन के कृत्य एवं प्रवृत्ति पर बल देता है।

लेखक तथा न्यायाधीश **जेरोम फ्रैंक** ने अपनी कृति **'द लॉ एंड मॉडर्न माइंड'** में यह सिद्धांत प्रतिपादित किया कि विधि अनिश्चित होती है। विधि की निश्चितता एक विधिक कपोल-कल्पना है। वकीलों और न्यायाधीशों के लिए यह उचित नहीं है कि वे पूर्वनिर्णय या संहिताकरण के नाम पर विधि निश्चितता की कपोल-कल्पना से चिपकें। बल्कि विधि निर्माण परिवर्तित सामाजिक दशाओं में एक - एक मामले के तथ्यों का मूल्यांकन करके किया जाना चाहिए तथा उसे सभ्यता की प्रगति के अनुरूप विकसित करना चाहिए।

एक अन्य विधिशास्त्री लिवेलिन ने यथार्थवादी विचारधारा को संक्षेप में इस रूप में अभिव्यक्त किया कि ''यथार्थवाद का अर्थ, विधि के बारे में चिंतन और कार्य में एक आंदोलन से है और विधिशास्त्री का यह कर्तव्य है कि वह इसकी परीक्षा करे कि विधि किस प्रकार तत्कालीन सामाजिक आवश्यकताओं का समाधान करती है।''

वस्तुतः यथार्थवाद परंपरागत विधि के नियमों और संकल्पनाओं पर निष्ठा रखने के बजाय विधि की सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप उसकी गतिशीलता पर बल देता है। यह स्वयं को इस बात पर अधिक केंद्रित करता है कि न्यायालय और व्यक्ति क्या कर रहे हैं।

स्वीडिश विधिशास्त्री हैगर स्ट्रोम एवं ओलाइव क्रोना ने भी यथार्थवादी विचारधारा में अपना योगदान दिया। हैगर स्ट्रोम जहां आधुनिक काल में विधिक संकल्पनाओं के वास्तविक प्रयोग की परीक्षा और विधि की संकल्पना में अंतर्निहित मानसिक प्रवृत्ति के विश्लेषण को विधि का मुख्य विषय-वस्तु मानते हैं, वहीं क्रोना ने अपनी कृति 'लॉ ऐज फैक्ट' में कहा है कि विधि सर्वदा मनुष्यों के कार्यों से संबंध रखती है और इसलिए विधि के अध्ययन को सामाजिक तथ्य के रूप में लिया जाना चाहिए

और विधि के प्रति एक सही दृष्टिकोण के लिए समाजशास्त्रीय अनुसंधान आवश्यक है।

सारतः यथार्थवादी विचारधारा के विचारकों ने विधिशास्त्र एवं विधि की स्पष्ट परिभाषा या कोई सर्वमान्य सिद्धांत प्रतिपादित करने के बजाय विधि के सामाजिक प्रभावों पर तथा तदनुरूप विधिक विनिश्चयों पर जोर दिया है। परिणामतः इसे समाजशास्त्रीय विचारधारा का एक अंग और पूरक के रूप में देखा जाता है। संभवतः इसीलिए प्रो. एलेन ने इस विधारधारा को समाजशास्त्रीय विधिशास्त्र का एक दूसरा अवतार माना है, तो **जूलियस स्टोन** ने इसे **''समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण का एक भाष्य''** कहा है।

इस विचारधारा की इस बात पर आलोचना की जाती है कि यह शाखा विधि के भावी स्वरूप और प्रकृति पर ध्यान केंद्रित करती है तथा मानव तत्व के बारे में अत्युक्ति करते हुए अध्ययन का विषय-वस्तु को केवल वादों (मुकदमों) पर केंद्रित किया गया है जिन पर न्यायाधीशों/विधिशास्त्रियों को अपना विनिश्चय करना है। इस प्रकार यह प्रयोगों एवं निष्पादनों की एक शृंखला मात्र है तथा यह अमेरिकी सामाजिक-न्यायिक व्यवस्था में लागू हो सकती है, न कि सर्वव्यापी रूप में। यही कारण है कि यह विचारधारा अधिक लोकप्रिय नहीं हो सकी।

प्रश्नकोश

Q. यथार्थवादी विचारधारा किस देश में विकसित हुई?

A. **अमेरिका** में।

Q. यथार्थवादी विचारधारा के मुख्य विचारक कौन हैं?

A. **ग्रे, होम्स, जे. फ्रैंक, लिवोलिन, हैगर स्ट्रोम, क्रोना** इत्यादि।

Q. विधिशास्त्र की कौन-सी विचारधारा है, जो उन शक्तियों का अध्ययन करती है, जो न्यायाधीशों को निर्णय लेने में प्रभावित करती हैं?

A. **यथार्थवादी विचारधारा**।

Q. ''यथार्थवादी विचारधारा समाजशास्त्रीय विधिशास्त्र का एक दूसरा अवतार है।'' यह कथन किसका है?

A. **प्रो. एलेन** का।

Q. ''यथार्थवादी विचारधारा समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण का एक भाष्य है।'' यह कथन किस विधिशास्त्री का है?

A. **प्रो. जूलियस स्टोन** का।

Q. यथार्थवादी विधिशास्त्रियों ने विधि को किस भाव में वर्णित किया है?

A. **विध्यात्मक भाव** में।

Q. ''विधि की निश्चितता एक कपोल-कल्पना है'' यह दृष्टिकोण किस विचारधारा का है?

A. **यथार्थवादी विचारधारा** का।

Q. 'लॉ एज फैक्ट'' के लेखक कौन हैं?

A. **ओलाइव क्रोना**।

Q. 'दी लॉ एंड मॉडर्न माइंड'' के लेखक कौन हैं?

A. **जेरोम फ्रैंक**।

वियना-विचारधारा : विधि का विशुद्ध सिद्धांत (The Pure Theory of Law)

विधि के विशुद्ध सिद्धांत अर्थात् वियना-विचारधारा के प्रवर्तक ऑस्ट्रिया के वियना विश्वविद्यालय के **प्रो. हैन्स केल्सन** हैं, जिसका प्रथम निरूपण वर्ष 1911 में किया गया। तत्कालीन देश काल और वातावरण में प्राकृतिक विधि की परंपरागत धारणा, विश्व युद्ध के परिणामस्वरूप अंतरराष्ट्रीय संगठनों की उत्पत्ति और जनांदोलन के परिणामस्वरूप लिखित संविधानों के सृजन ने केल्सन को **'विधि के विशुद्ध सिद्धांत'** की अवधारणा विकसित एवं प्रतिपादित करने को बाध्य किया और उन्होंने **प्रधान मान (Grand norms)** को विधि के विशुद्ध सिद्धांत की आधारशिला मानते हुए विधि को मानों के सोपान-तंत्र (Hierarchy of norms) की संज्ञा दी।

चूंकि केल्सन का सिद्धांत ऑस्टिन के 'विध्यात्मवाद' और 'बल-प्रयोग' का समर्थन करता है, इसलिए इस शाखा को **नव ऑस्टिनवाद** की भी संज्ञा दी जाती है। साथ ही केल्सन का सिद्धांत समाजवादी विचारधारा के विचारक ड्यूगिट के सामाजिक समेकता के सिद्धांत के निकट भी है। चूंकि केल्सन का विधि संबंधी सिद्धांत विधि को ''तत्वमीमांसीय कुहा'' (Metaphysical mist) से पृथक करने की ओर अग्रसर रहता है। इसी कारण इसे विधि का विशुद्ध सिद्धांत कहा जाता है।

केल्सन ने स्पष्ट किया कि ''विधि एक मानात्मक विज्ञान (Normative Science) है।'' इसे आगे स्पष्ट करते हुए केल्सन ने कहा है कि ''विधि का विज्ञान मानात्मक संबंधों के सोपान तंत्र

का ज्ञान है'' (Science of law is knowledge of hierarchy of normative relation)। यह 'विध्यात्मक विधि' का यथा संभव ठीक-ठीक संरचना संबंधी ऐसा विश्लेषण है, जो मूल्य के समस्त नैतिक और राजनैतिक निर्णयों से मुक्त हो। अपने विधिक सिद्धांत को स्पष्ट करते हुए केल्सन ने निम्नलिखित विधिक अवधारणाएं प्रस्तुत कीं–

(i) प्रत्येक विधिक कार्य किसी मान से संबंधित होता है, जो इसे विधिक मान्यता प्रदान करता है।

(ii) विधिक मान अपनी विधिमान्यता किसी बाहरी स्रोत अर्थात् किसी विशिष्ट 'होना चाहिए मान' अथवा अनुशास्ति से प्राप्त करता है, किंतु अनुशास्ति वह नहीं है जैसा कि ऑस्टिन ने विचारित किया अपितु यह स्वयं एक अन्य मान है।

(iii) प्रत्येक अवर मान अपना बल मूल मान अर्थात प्रधान-मान (Grand norm) या किसी मूल प्रमेय (Initial hypothesis) से प्राप्त करता है।

(iv) प्रधान मान किसी विधिक प्रणाली में आरंभिक बिंदु होता है जिससे कोई विधि प्रणाली क्रम व्यवस्था में विस्तृत होती रहती है जो एक गयात्मक प्रक्रिया है।

(v) प्रत्येक विधि प्रणाली में हमेशा ही एक प्रधान मान भिन्न-भिन्न स्वरूप में रहता है जिसे न्यूनतम प्रभाविष्णुता के द्वारा पहचाना जा सकता है। जैसे- ब्रिटेन का प्रधान मान संसदयुक्त सम्राट और अमेरिका व भारत में संविधान।

(vi) विधि सिद्वांत का कार्य प्रधान मान और अन्य अवर मानों के बीच में विद्यमान संबंधों को स्पष्ट करना है।

(vii) प्रधान मान की उत्पत्ति और प्रकृति से विधिशास्त्रियों का कोई सरोकार नहीं होता है।

(viii) संप्रभुता जैसी कोई संकल्पना नहीं होती है। विधि और राज्य अलग-अलग नहीं, अपितु एक ही वस्तु हैं।

(ix) लोक विधि और प्राइवेट विधि में कोई अंतर नहीं है। क्योंकि सभी विधियां अपनी शक्ति प्रधान मान से प्राप्त करती हैं।

(x) नैसर्गिक विधि और विधिक व्यक्तियों के बीच में कोई अंतर नहीं है। समस्त विधिक व्यक्तित्व कृत्रिम होता है और अपनी विधिमान्यता वरिष्ठ मानों से प्राप्त करता है।

(xi) व्यक्ति का कोई व्यक्तिगत अधिकार नहीं होता है। विधिक कर्तव्य ही 'विधि के सार' हैं। विधि सर्वदा 'होना चाहिए' की एक प्रणाली है।

(xii) अंतरराष्ट्रीय विधि को भी एक न्यायिक तंत्र माना जाना चाहिए। इस विधि के प्रधान मान के रूप में **'पैक्टा संट सर्वैंडा (Pacta sunt servanda)** को माना जा सकता है।

(xiii) विधि को नीतिशास्त्र,राजनीतिशास्त्र,समाजशास्त्र, इतिहास से मुक्त होना (विशुद्ध) चाहिए।

इस प्रकार केल्सन ने विधि एवं विधिशास्त्र की अवधारणा को एक नया आयाम दिया। प्रत्यक्षत: या अप्रत्यक्षत: केल्सन के **'प्रधान मान'** का सिद्वांत विश्व की प्राय: सभी विधिक प्रणालियों में अस्तित्ववान है भले ही इसे जाना अथवा पहचाना न जा सका हो। यही कारण है कि केल्सन के राज्य, विधि, अधिकार एवं कर्तव्य, लोक एवं प्राइवेट विधि, अधिकार एवं कर्तव्य, लोक एवं प्राइवेट विधि संबंधी संकल्पनाओं को व्यापक समर्थन प्राप्त हुआ और आज भी यह विधि की अनेक विधिक प्रणालियों में अध्ययन की एक सशक्त और महत्वपूर्ण विषय-वस्तु है।

केल्सन के सिद्वांत की निम्न रूपों में आलोचना की जाती है–

(i) प्रधान मान का अस्तित्व अस्पष्ट एवं भ्रामक है।

(ii) विभिन्न मानों की विशुद्धता को कायम नहीं रखा जा सकता है।

(iii) प्राकृतिक विधि की उपेक्षा की गई है।

(iv) अंतरराष्ट्रीय विधि इस सिद्वांत की दुर्बलतम कड़ी है।

(v) मानात्मक सिद्धांत का कोई व्यवहारिक महत्व नहीं है।

प्रश्नकोश

Q. किसने कहा था ''विधि मानकों का विज्ञान है.''?

A. **केल्सन** ने।

Q. ''मानक एक क्रिया का नाम है जिसके द्वारा एक निश्चित आचरण को आदेशित, अनुज्ञात या अधिकृत किया जाता है।'' यह परिभाषा किस विधिशास्त्री ने दी है?

A. **केल्सन** ने।

Q. केल्सन के विधि के सिद्धांत को विशुद्ध सिद्धांत कहते हैं, क्यों?